Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2

Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

'परती परिकथा' और 'ऋणजल' धनजल की वास्तविकता – (फणीश्वर नाथ रेणु)

डॉ. एस. के. ठाकरे, सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, जी. टी. पाटील कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय, नंदुरबार जि. नंदुरबार

प्रस्तावित

फणीश्वर नाथ रेणुका जीवन परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य में फणीश्वर नाथ रेणु प्रसिद्ध आंचलिक साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं| उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है| उनकी रचनाओं को पढ़कर ऐसा लगता है, मानो ग्रामीण जीवन साक्षात दर्शन हो रहे हैं| फणीश्वर नाथ रेणु एक लेखक होने के साथ स्वतंत्रता सेनानी भी थे| जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन में मुख्य भूमिका निभाई थी| इसके साथ रेणु अपनी विशिष्ट भाषा शैली हिंदी कथा साहित्य को एक नया आकार दिया था|

वही आधुनिक हिंदी साहित्य में अपना विशेष योगदान देने के लिए फणीश्वर नाथ रेणु जी को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से भी सन्मानित किया जा चुका है| बता दे की फणीश्वर नाथ रेणु की कई रचनाए जिसमे 'मैला ऑचल', 'परती परिकथा' और 'कितने चौरहे' ' मारे गए गुलकाम' , ' एक आदिम रात्रि की महक', 'लाल पान की बेगम' आदि को विद्यालय के साथ ही दिए और एम.ए. के सिलेबस में विभिन्न विश्वविद्यालय में पढ़ाया जाता है| वही बहुत से शोधार्थियों मैं पढ़ाया जाता है| वही बहुत से शोधार्थियों ने उनके साहित्य पर पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की है| इसके साथ ही युजीसी नेट में हिंदी विषय से परीक्षा देने वाले विद्यार्थी के लिए भी फणीश्वर नाथ रेणुका जीवन परिचय और उसकी रचनाओं का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है|

फणीश्वर नाथ रेणु की परती परीकथा-

यह एक उपन्यास है इसका प्रकाशन 21 सितंबर 1957 में हुआ था| परती परीकथा कुछ विशेष चरित्र्य है| उपन्यास में समक्ष इस विधा के प्रश्न और उसके वर्णित समाज के समक्ष जीवन के बीच बिंब - प्रतिबिंब संबंध दिखाई देता है| इस उपन्यास के कथानक का आकर्षण क्षीणता और विरासत के अलावा उसमें उसकी आलोचनात्मक समष्टि है| हिंदी में बहुत कुछ कृतियां ऐसी है, जो जीवन की सच्चाई को व्यक्त करती है|

'परती परिकथा' फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित ऐसी कृति है जिसमें ग्रामीण जीवन को उसकी समस्याओं को वास्तविक चित्रण उभरता है| भारतीय राष्ट्रीय समस्याओं के बदलते हुए राजनितिक,

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

सामाजिक, मुल्यपर गहरी नजर है| यह उपन्यास ऑचलिक होते हुए भी देश की वास्तविक छवि को प्रस्तुत करती है|

'परती परिकथा' मे लेखक ने कहां की 'सूखे' की स्थिति का जायजा लेने के लिए गाँव के कुछ लोगों से प्रश्न किया, तो लोगों से उत्तर मिला की "सात दिन पहले बच्चों को जन्म देने वाली माँ को खाना न मिलने से दूध नहीं उतर पा रहा है|" एक लड़की ने पूछने पर अपना नाम जसोदा बताया तो, और घर से एक औरत बोली "ई अकलावा के भी छापी (तस्वीर) उतरावा दे|" यह सुनकर फणीश्वर नाथ रेणु जीने कहाँ की, यह बच्चे अकाल काल में पैदा हुए तो उनका नाम 'अकालू' 'अकलवा' रखना चाहिए और सूखे में जन्मे बच्चों के नाम 'सूखी' और 'सूखही' रखना चाहिए|

फणीश्वर नाथ रेणुका का 'सूखे' के संबंध में वर्णन

फणीश्वर नाथ रेणु जी शहर छोड़कर अज्ञेय के साथ कहीं जा रहे थे| सड़क को छोड़कर दोनों देख रहे थे की भूमि पूर्ण रूप से शुष्क हो चुकी है| हरियाली कई पर भी दिखाई नहीं दे रही थी| अनाज भी कहीं दिखाई नहीं दे रहा था| दुकानों में कुछ अधिक दिखाई नहीं दे रहा था| बच्चे भूखे ही स्कूल में जा रहे थे| दूध बच्चों को नहीं मिल रहा था| बीच में हल्की सी बारिश हो रही थी| किसान हल जोतते तथा कुदाल चलाते हुए दिखाई देते थे| लोगों ने भी काल से लड़ने के लिए कुएँ खोदने का विचार कर लिया था| पानी लगना असंभव था| पानी पाताल की और जा चुका था| रैपुरा सिरसा गाँव में रेणू जी ने हलवाए से पूछा तो अपना नाम 'जोगी' बतलाया खेत में काम कर रहे एक आदमी ने आज्ञेय और रेनू जी के पास आकर अपने हिम्मत की बात कही कि, आदमी जीवंत रहने तक हार नहीं मानता इसलिए हमें सुख से लड़ रहे थे आगे ईश्वर की मर्जी|

फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित 'परती परीकथा' उपन्यास में देहाती जीवन की वास्तविक स्थिति का चित्रण हुआ है| इस उपन्यास में सामाजिक जीवन का चिंतन हुआ है| यह उपन्यास आँचलिक होने के साथ में साथ एक नायकत्व मिला है| जिसके कारण यह उपन्यास एक कथानक को प्रस्तुत करता है| 'परती परीकथा' यह उपन्यास भूमि, जमीन एवं धरती इन सभी को लेकर एक व्यथा भरी कथा बंजर धरती की छोटी मोठी धरती की नदी आज भी जल भरे कलकल में और में सुर में सुना जाती है| 'परती परीकथा' फरहानपुर गांव की मुख्य कथा है| इस गाँव को लेकर फणीश्वर नाथ रेणु ने विशेषताओं को सामने लाया है| परानपूर गाँव एक परती का प्रतीक होने के कारण प्रयागराज, काशी, पाटलिपुत्र जैसे ऐतिहासिक पारंपरिक, परिस्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है| रेणु जी ने इस उपन्यास में छोटे-छोटे आँचलिक दृश्यों को चित्रित किया है| फणीश्वर नाथ रेणु जी परानपूर आँचलिक माध्यम से ग्रामीण जीवन का चित्र प्रस्तुत करना चाहते हैं| फणीश्वर नाथ रेणु ने

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

परानपूर गाँव के संदर्भ में कहां है ग्राम परानपूर थाना रानीगंज, परानपूर की प्रतिष्ठा सारे जिल्हे में है| सबसे उन्हत गाँव समझा जाता है| इस इलाके के सबसे उन्नत गाँव है परानपूर"

परती परिकथा में जहां फणीश्वर नाथ रेणु ने अकालजन्य व्यथा भरी कथा का विवेचन किया है जिसमें आज भी छोटी बड़ी न दिया तक भरे जल से कल कल कर रही है| एक और फणीश्वर नाथ रेणु जी अकाल जन्य स्थिति का वर्णन अपने 'परती परिकथा' में जहाँ फणीश्वर कर रहे हैं| तो दूसरी और अपने रिपोतार्ज ऋण धन में बिहार की बाढ़ की वास्तविक स्थिति का वर्णन किया है| एक और फणीश्वर नाथ रेणु जी सूखे किसानो की समस्याओं का चित्रण अपनी परती परिकथा में करते हैं| तो दूसरी ओर किसानोंओ की समस्या बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र की समस्याओं का वर्णन रिपोतार्ज में करते हैं| सन 1966 मे जो बिहार में सूखा अकाल पड़ा था| उसका ऋणजल, जलजल इस उपन्यास में फणीश्वर नाथ रेणु जी ने आंखों देखा हाल प्रस्तुत किया है| उसे समय बिहार में अकाल के कारण कंकाल ही कंकाल नजर आ रहा था| इसके पश्चात सन 1975 में बिहार में ऐसा जल प्रलय आया था, जिसमें रेणु जी ने बाढ़ की स्वयं अनुभव किया है| जिसमें पटना के पश्चिम इलाकों में छाती भर पानी भर चुका था| इन बाढ के कारण घर में दवाइयां, मोमबत्ती, इंधन, आदि की आवश्यकता के अनुरूप लेखक ने सुविधा कर ली थी| ताकि कोई समस्या उत्पन्न ना हो|

फणीश्वर नाथ रेणु जी से रहा नहीं गया इसलिए वे रिक्षा करके बाढ़ की स्थिति का जायजा लेने के लिए निकल पड़े उसे समय लोगों ने की भीड़ दिखाई दी| एक आदमी ने उन्हें रोका और कहां की पानी में करंट उतर गया है, यह सुनकर रेणु जी गाजी रास्ते पर चल पड़े| उसे समय रिक्षा, टमटम, ट्रक पर समान लादे जा रहे थे| हर तरह भयभयित वातावरण दिखाई दे रहा था| जनसंपर्क की गाड़ी राजेंद्र नगर की ओर मुड पड़ी थी और लोगों को सूचना की माध्यम से बाढ़ की स्थिति को लेकर सर्वत्र एक ही बात सुनाई पड़ रही थी कि, बाढ़ की स्थिति तो और भी गंभीर होती जा रही है| इसलिए हर परिवार में अपनी सुरक्षा का प्रबंध करना चाहिए|

फणीश्वर नाथ रेणु जी द्वारा लिखित ऋणजल, धनजल यह एक रिपोतार्ज तक है जिसमें एक संस्मरण रेणु जी ने हमारे सामने साक्षात उपस्थित कर लिया है| इस रिपोतार्ज ने इन्होंने ऋणजल का अर्थ की जल की कमी अर्थात 'सुखा' (सूखी धरती) और धन जल का अर्थ है 'जलप्रलय' यानि बाढ़ ग्रस्त स्थिति इसमें बिहार में सन 1966 में पड़े महा भयंकर अकाल और सन 1975 में आयी| महा भयंकर बाढ़ की स्थिति का वर्णन फणीश्वर नाथ रेणु ने अपने इस दोनों विधानों में किया है| सन 1967 में बिहार में महा भयंकर अकाल पड़ा था| तो वही 1975 में आयी हुई महा भयंकर बाढ़ के कारण पटना की सड़कों और घरों को जलने लपेट लिया था| सेकडों, हजारों, लाखों लोगों का जीवन संकट में आ गया था| संपूर्ण मानव जीवन में एक प्रकार का

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

हाहाकार मच गया था| यह सब कुछ चित्रण देख कर फणीश्वर नाथ रेणु के हृदय में सहानुभूति जाग उठी थी| उनका हृदय करुणा से भर गया था|

'परती- परिकथा' उपन्यास में परानपुर गाँव की वास्तविक जीवन कथा को लेखक ने अपने उपन्यास के माध्यम से सामने लाया है| परानपुर गॉव में अनेक जातियों के लोग रहा करते हैं| पर इनमें सरकारी योजना के माध्यम से कुछ सुधार करने का प्रयास कर जा रहा है| विकास योजनाएं लाने पर लोगों में विश्वास उमड़ आता है|

फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखित रिपोतार्ज ऋणजल धनजल मे वास्तविक रोमांच कारिक स्थिति का आँखो देखा हाल चित्रित किया है, जिसमें उन्होंने मर्मस्पर्शी चित्रण कर पाठकों के सामने रोंमटे खड़े कर दिए हैं| पटना शहर में जो प्रलयकारी बाढ़ आयी थी उसका रोमांचकारी वर्णन कर जिसमें लेखक ने खुद अनुभव किया था| इस दृश्य को मानवीय आपत्ति का वर्णन किया है| मानव की यातना का वर्णन भी इन्होंने अपने रिपोतार्ज में किया है|

फणीश्वर नाथ रेणु जहां 1966 में बिहार में पड़ा सूखा का वर्णन परती परिकथा में किया है| उसे समय देश में पड़ी अकाल छाया में बिहार के साथ-साथ पुरा देश जल रहा था| इस अकाल में कंकाल ही कंकाल नजर आ रहा था| इसके पश्चात 1975 में बिहार में महाप्रलयकारी बाढ़ आयी| इस बाढ में पटना के साथ-साथ संपूर्ण बिहार में महा संकट आ पहुंचा था| फणीश्वर नाथ रेणु इन्हीं दो स्थितियों का वर्णन 'परती परिकथा' और 'ऋणजल - धनजल' मैं सूखा और बाढ़ ग्रस्त स्थिति का वर्णन करते हैं|

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) 'परती परिकथा'- फणीश्वर नाथ रेणु संस्करण 2009, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली|
2) फणीश्वरनाथ रेणु (भारतीय साहित्य के निर्माता), सुरेंद्र चौधरी, संस्करण- 2000, साहित्य अकादमी|
3) 'परिषद पत्रिका' (फणीश्वर नाथ रेणु, विशेषांक)- (संपा), मिथिलेश कुमारी मिश्रा, जुलाई दिसंबर 2009 बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना|
4) फणीश्वर नाथ रेणु की रिपोतार्ज 'ऋणजल धनजल'- प्रकाशन साल 1988 में राजकमल प्रकाशन ने किया था|

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved